

## পাঠ 22 পাঠ

লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা

মি. পাল : নমস্কাৰ মহাশয়। আমি  
গুৱাহাটী দূৰদৰ্শনৰ তৰফৰ পৰা  
আহিছোঁ।

ডা. নেওগ : আহক, আহক! ফুলনিতৈ বহোঁ।

মি. পাল : আপুনি লক্ষ্মীনাথ  
বেজবৰুৱাৰ ওপৰত কিতাপ  
এখন লিখি পুৰস্কাৰ পাম্পছে।  
আপুনি আমাৰ দৰ্শকক  
বেজবৰুৱাৰ লগত পৰিচয় কৰি  
দিবনে?

ডা. নেওগ : লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা অসমৰ  
এজন মূৰ্খাফুঁ সাহিত্যিক।  
তেখেতে নিজেম্প উল্লেখ কৰা  
মতে ১৮৬৮ চনত তেওঁ ভূমিষ্ঠ  
নহৈ নৌকাঠ হয়। তেওঁৰ জন্মৰ  
কিছুদিন আগতে দেউতাক  
ডিবৰুৱাৰ পৰা গুৱাহাটীলৈ  
বদলি হয়।

মি. পাল : নমস্কাৰ মহাশয়। হম  
গুৱাহাটী দূৰদৰ্শন কী তৰফ  
সে আএ হৈঁ।

ডা. নেওগ : আइए, आइए, बगीचे में ही  
बैठें।

মি. পাল : লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা পৰ  
লিখী কিতাপ পৰ আপকো  
পুৰস্কাৰ মিতা হৈ। ক্যা আপ  
হমারে दर्शकों का परिचय  
बेजबरुवाजी के व्यक्तित्व और  
कृतित्व से करा सकेंगे?

ডা. নেওগ : বেজবৰুৱাজী অসম কে মূৰ্ধন্য  
সাহিত্যিকার হৈঁ। उनका जन्म  
उन्हीं के मुताबिक 1868 ई. में  
जमीन पर न होकर नाव पर  
हुआ था। उनके जन्म के  
कुछदिन पहले उनके पिताजी  
का स्थानांतरण डिब्रु से  
गुवाहाटी हुआ था। नाव से  
आते समय उनका जन्म  
ब्रह्मपुत्र के बीच हुआ था।

তেওঁলোক সপৰিয়ালে

नौकाबे आहि थाकौते  
ब्रह्मपुत्रब वुकुत तेउँब जन्य  
हय।

मि. पाल : येतिया लक्ष्मीनाथब जन्य  
हय, तेतिया असम वृद्धिब  
अधीन आछिल। येतिया तेउँ  
विद्याबस्तु करे, तेतिया  
पढाशालित कि भाषा चलिछिल?

डा. नेओग : तेतिया केरल पढाशालिते  
नहय, कछाबीतो बांग्ला भाषाहे  
चलिछिल। तेउँ असमीया भाषाब  
पुनब संह्वापनब बाबे अहो  
पुरुषार्थ करिछिल।

मि. पाल : कलेजीया शिक्षा तेउँ क'त  
लाभ करिछिल?

डा. नेओग : तेउँ एस्टेन्स पाछ करिलत  
देउताके कलेजीया शिक्षा  
लाभब कारणे तेउँक कलिकता  
लै पठियाय। कलिकतात पढि  
थाकौते तेउँ चन्द्रकुमार  
आगबरालाहँतब लग लागि  
“असमीया भाषाब उन्नति  
साधिनी

मि. पाल : लक्ष्मीनाथ जी का जब जन्म  
हुआ था, तब असम भी अंग्रेजों  
के अधीन था। उस समय  
स्कूलों में कौन कौन सी भाषाएँ  
पढ़ाई जाती थीं?

डा. नेओग : तब केवल पाठशालाओं में ही  
नहीं, कचारियों में भी बंगला  
भाषा ही चलती थी। उन्होंने  
असमिया भाषा की पुनर्प्रतिष्ठा  
के लिए महान कार्य किया था।

मि. पाल : उच्च शिक्षा उन्होंने कहाँ  
प्राप्त की थी?

डा. नेओग : एंट्रेंस परीक्षा उत्तीर्ण करने पर  
उनके पिताजी ने उन्हें उच्च  
शिक्षा के लिए कलकत्ता भेजा  
था। कलकत्ते में पढ़ते समय ही  
उन्होंने “असमिया भाषाब उन्नति  
साधिनी सभा” (असमिया भाषा  
की उन्नति करनेवाली सभा) की  
स्थापना की थी। यही सभा आगे  
चलकर असम साहित्य सभा के

रूप में परिणत हो गई।

सभा” प्रतिष्ठा करे। एम्प  
सभास्य पिछत 1971 चनत

असम

साहित्य सभाले मौ सलाय।

मि. पाल : तेउं यदि णुबि  
नधबिलेहेतेन अ.भा.उ.सा.  
बर्ति नाथाकिल- हेतेन। तेउं  
हेनो एखन आलोचनीउ  
उलियास्यपछिल।

डा. नेओग : हय, तेउं बाँही नामर एखन  
आलोचनीउ उलियास्यपछिल। यदि  
बाँही नोलालहेतेन, बहजन  
असमीया लिखकर जन्यास्य  
नह'ल हेतेन।

मि. पाल : एतिया आमि तेउंर  
बैबाहिक जीरनर बिषये  
दू'षार शूनोचोन।

डा. नेओग : यिहेतु तेउं साहित्य चर्चा  
करिछिल, कलिकतार ठाकुर  
परियालर लगत तेउंर घनिष्ठ  
सम्पर्क हेछिल। तेउं ठाकुर  
परियालर श्रीमती प्रजा सुन्दरी

मि. पाल : अगर उन्होंने उस सभा की  
जड़ें मजबूत न की होतीं तो  
अ.भा.उ.सां. सभा जीवित नहीं  
रहती। सुना है उन्होंने एक  
पत्रिका भी निकाली थी?

डा. नेओग : जी हाँ, उन्होंने बाँही (वंशी)  
नामक एक पत्रिका भी निकाली  
थी। बाँही का प्रकाशन अगर  
नहीं होता तो अनेक असमिया  
लेखकों का जन्म भी नहीं होता।

मि. पाल : कृपया अब उन के  
वैवाहिक जीवन के संबंध में भी  
कुछ बताइए।

डा. नेओग : चूँकि वे साहित्य में भाग लेते  
थे इसलिए कलकत्ते के ठाकुर  
परिवार के साथ उनके घनिष्ठ  
संबंध हो गए थे। उन्होंने ठाकुर  
परिवार की श्रीमती प्रजा सुंदरी  
देवी से शादी की थी। इस तरह  
उन्होंने असम-बंगाल के बीच  
सौहार्द्र-सेतु का काम किया था।

मि. पाल : सुना है उन्होंने लकड़ी का

देरीक विया कबास्पछिल।  
एनेकै तेउँ असम-वेङ्गलर  
माजत

सौहार्दयर सेतु बाङ्गिछिल।

मि. पाल : तेउँ हेनो काठर  
ब्यरसायो करिछिल। सँचाने  
बारू?

डा. नेओग : ह्य, तेउँ सन्धलपूरत थाकि  
काठर कारवार करिछिल। तेउँ  
एकेधारे ब्यरसायी, कवि,  
गल्लकार, सांवादिक आरू  
समाजकर्मि आछिल। मानुहे  
यदिओ तेउँक *बसराज* बोले,  
तेउँ केरल *बसराजेस्प* नह्य,  
तेउँ असमीयार महान  
साहित्यरथीओ।

मि. पाल : तेउँ बहू कवितार उपरिओ  
बहूतो गीति-कविता बचना करि  
थै गैछे। एस्प विषये आपुनि  
किवा मतामत दिव खोजे

व्यवसाय भी किया था?

डॉ. नेओग : हाँ, उन्होंने संबलपुर में रहकर  
लकड़ी का व्यवसाय किया था।  
वे एक साथ व्यवसायी, कवि,  
कहानीकार, पत्रकार तथा  
समाज सेवक थे। लोग यद्यपि  
उन्हें *रसरज* कहते हैं तथापि वे  
केवल *रसरज* ही नहीं थे। वे  
असमिया के महान साहित्यकार  
भी थे।

मि. पाल : उन्होंने कविताओं के साथ  
बहुत सारे गीत भी लिखे हैं।  
इस के बारे में आप कुछ  
बताएँगे क्या?

डॉ. नेओग : बेजबरुवा एक सिद्ध-हस्त  
गीतकार भी थे। उन्होंने असम  
के जातीय संगीत की रचना की  
है। जैसे,

*ओ! मेरे अपने देश  
ओ! मेरे सुंदरतम देश  
इतने मधुर  
इतने सुफला*

*ओ! मेरे सर्व प्रिय देश!*

इसके अलावा उनके द्वारा  
लिखित एक अन्य गीत को

नेकि?

डा. नेओग : बेजबबुरा एजन ओखापब  
गीतिकवि आछिल। असमब यिँ  
‘जातीय संगीत’ सेम्पटो  
बेज-बबुराप्प बचना कबा।  
सेम्पटो हल--

অ' মোৰ আপোনাৰ  
দেশ

অ' মোৰ চিকুণী দেশ

এনেখন সুরলা

এনেখন সুফला

এনেখন मबमब देश....

म्पयाब উপबिओ तेथेतब  
आन ट्रा गीतक ‘असम  
संगीत’ बुलि कोरा हय।

मि. पाल : चाब, अनुग्रह कबि ‘असम  
संगीत’टो अलपमान गाम्प  
दिव नेकि?

डा. नेओग : निश्चय, निश्चय... प्रथमते तेओ  
कैछे --

आमि असमीया, नहओँ दुखीया  
किहब दुखीया ह'म;

‘असम-संगीत’ की मान्यता  
प्राप्त है।

मि. पाल : उस संगीत का भी थोड़ा  
परिचय दे सकेंगे क्या?

डॉ. नेओग : जरूर, जरूर! उनके गीत की  
पहली पंक्तियाँ हैं :-

हम असमिया, कभी न होंगे  
दुखिया

किसके लिए होंगे दुखिया

सब कुछ था, सब कुछ है

पर इस सबसे बेभान हम।

अंत में वे कहते हैं --

बजने दो नगाड़े, बजने दे शंख

बजने दो खोल याकि मृदंग

असम फिर उन्नति पथ पर

जय आई असम बोल।

मि. पाल : आपके साथ बातें कर हमें  
बहुत सारी बातों की जानकारी  
मिली।

आपसे हमारे दर्शक भी बहुत  
सारी बातें जान सके। दूरदर्शन  
और मेरी तरफ से आपका बहुत  
बहुत धन्यवाद।

সকলো আছিল, সকলো  
 আছে  
 নুশুনোঁ নলওঁ গম।  
 শেষত তেওঁ কৈছে .....  
 বাজক ডবা বাজক শংখ  
 বাজক মৃদংগ খোল;  
 অসম আকৌ উন্নতিৰ  
 পথত  
 জয় আৰু অসম  
 বোল।

ডা. নেওগ : নমস্কাৰ।

মি. পাল : আপোনাৰ লগত কথা  
 পাতি আজি আমি বহুত কথা

জানিলোঁ। দৰ্শকেও আজি  
 বহুত কথা জানিব পাৰিলে।  
 দূৰদৰ্শন আৰু  
 মোৰ নিজৰ তৰফৰ পৰা  
 আপোনাক শলাগ জনালোঁ।  
 নমস্কাৰ।

ডা. নেওগ : নমস্কাৰ।

শব্দার্থ

অসমীয়া শব্দ	हिन्दी अर्थ
দূৰদৰ্শন	दूरदर्शन
তৰফ	तरफ
ফুলনি	फूलों का बगीचा
দৰ্শন	दर्शन
মূধাফুঁ	मूर्धन्य, धुरंधर
নটহ	न होकर
আগতে	पहले
বদলি	बदली, स्थानांतरण
নৌকাৰে	नाव से
আহি থাকোঁতে	आते समय
বুকুত	वक्ष पर, के बीच
জন্ম	जन्म
অধীনত	के अधीन में
পঢ়াশালি	पाठशाला
চলিছিল	प्रचलित था
পুনৰ	पुनः
সংস্থাপন	संस्थापना
আহোপুরুষার্থ	पुरुषार्थ, उद्योग
কৰিলত	करने पर
উচ্চ শিক্ষা	उच्च शिक्षा
লাভৰ কাৰণে	लाभ के लिए
পঠিয়ায়	भेजते हैं
পঢ়ি থাকোঁতে	पढ़ते समय
	उन्नति

उन्नति	साधिनी (उन्नति करनेवाली)
प्राधिनी	सभा
प्रभा	प्रतिष्ठा
प्रतिष्ठा	रूप बदलता है
मो प्रलाय	जड़
गुर्बि	जीवित
वर्ति	पत्रिका
आलोचनी	वंशी, बाँसुरी
बाँशी	लेखक
लिखक	वैवाहिक, विवाह संबंधी
वैवाहिक	दो बातें
दू-आषाढ	चूँकि
यिहेतु	घनिष्ठ
घनिष्ठ	शादी की थी
बिया कबाँपछिल	सौहार्द्र
सौहार्द्र	लकड़ी का
काठ	व्यवसाय
काबवाब	एक ही साथ
एकेधारे	व्यवसायी
ब्यरप्रायी	कवि
कवि	कहानीकार
गल्लकार	पत्रकार
सांवादिक	समाज सेवक
समाजकर्मो	रसराज
बसबाज	महान
	साहित्यकार



মহান	गीत-कविता
সাহিত্যৰথী	गीतकार
গীতিকবিতা	टिप्पणी
গীতিকবি	सबसे सुंदर
মতামত	सुनने में मधुर
চিকুগী	फल-फूल से भरा हुआ
সুরলা	
সুফলা	

### অভ্যাস

#### I. উদাহৰণ অনুসৰি বাক্য সলনি কৰক।

উদাহৰণ:

(ক) তেওঁ ভূমিষ্ঠ নহ'ল, নৌকাষ্ঠ হ'ল।

→ তেওঁ ভূমিষ্ঠ নহৈ নৌকাষ্ঠ হ'ল।

1. তেওঁ শিৱসাগৰলৈ নগ'ল, ডিব্ৰুগড়লৈ গ'ল।
2. তেওঁ ভাত নাখালে, ৰুটি খালে।
3. মম্প চিনেমা নাচালোঁ, চাৰ্কাচ চালোঁ।
4. তুমি কাম নকৰিলা, শুম্প থাকিলা।
5. মম্প কিতাপ মন নপঢ়িলোঁ, ঘূৰাম্প দিলোঁ।

(খ) মম্প যেতিয়া পঢ়োঁ, তেতিয়া কথা নাপাতোঁ।

→ মম্প পঢ়োঁতে কথা নাপাতোঁ।

1. মম্প যেতিয়া পুৰীলৈ গৈছিলোঁ, তেতিয়া সাগৰ দেখিছিলোঁ।

2. মস্প যেতিয়া পাহাৰৰ থিয় গড়া ঐ বগাম্পছিলোঁ, তেতিয়া তলত পৰি গৈছিলোঁ।
3. তেওঁ যেতিয়া কাৰবাৰ কৰিছিল, তেতিয়া বহুত লাভ হৈছিল।
4. মস্প যেতিয়া শুম্প আছিলোঁ, তেতিয়াম্প ঐ প্ৰচণ্ড ভূমিকম্প আহিছিল।
5. শিক্ষকে যেতিয়া পঢ়াম্প আছিল, তেতিয়া ল'ৰা-ছোৱালীবোৰে বৰ কথা পাতিছিল।

(গ) বাছখন ৰ'ল, মানুহবোৰ নামিল।

→ বাছখন ৰ'লত মানুহবোৰ নামিল।

1. আলহী গ'ল; মস্পও ফুৰিবলৈ গ'লোঁ।
2. দেউতাকে তাক পম্পছা দিলে; সি কিতাপ কিনিলে।
3. তেওঁ এম.এ পাছ কৰিলে; চাকৰি কলেজত পালে।
4. তেওঁ “অসম দৰ্শন”খন পঢ়িলে; অসমৰ কথা বহুত গম পালে।
5. শিক্ষকজন বহিল; ক্লাছৰ ল'ৰা-ছোৱালীবোৰো বহিল।

II. তলত দিয়া শব্দৰ শাৰী বিলাকৰ পৰা প্ৰতিটো শব্দ ব্যৱহাৰ কৰি একোটকৈ বাক্য তৈয়াৰ কৰক।

1. ভূমিষ্ঠ : নৌকাষ্ঠ : ঘনিষ্ঠ
2. তৰফৰ পৰা : ফালৰ পৰা
3. হেতু : সেতু
4. দোঁ : দ
5. ক'ত : কতো : কৰবাত

III. প্ৰয়োজনীয় শব্দৰ ব্যৱহাৰ কৰি প্ৰতিটো বাক্যৰ পৰা দুটকৈ অৰ্থসূচক বাক্য তৈয়াৰ কৰক।

1. আপুনি পুৰস্কাৰ পোৱা বেজবৰুৱাৰ কিতাপখনেৰে আমাৰ দৰ্শকক বেজবৰুৱাৰ লগত পৰিচয় কৰি দিব নে?
2. বেজবৰুৱাৰ দেউতাক ডিবৰুৰ পৰা গুৱাহাটীলৈ সপৰিয়ালে নৌকাৰে আহি থাকোঁতে ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ বুকুত তেওঁৰ জন্ম হয়।
3. পঢ়াশালি আৰু কাছাৰীত চলি থকা বাংলাভাষাৰ সলনি অসমীয়া ভাষাৰ পুনৰ সংস্থাপনত বেজবৰুৱাসম্প অহোপুৰুষাৰ্থ কৰিছিল।
4. বেজবৰুৱাসম্প অসমীয়া আলোচনী বাঁহী নুলিওৱাহেঁতেন বহুজন অসমীয়া লিখকৰ জন্ম নহ'লহেঁতেন।
5. ৰবীন্দ্ৰনাথ ঠাকুৰৰ পৰিয়ালৰ প্ৰজ্ঞাসুন্দৰী দেৱীক বেজবৰুৱাসম্প বিয়া কৰাসম্প অসম আৰু বেঙ্গলৰ মাজত সৌহাৰ্দ্যৰ সেতু বান্ধিছিল।

#### IV. তলত দিয়া প্ৰতিযোৰ বাক্য লগলগাসম্প ঐ বাক্য গঠন কৰক।

1. আপুনি *বৰ্ণমালা* নামৰ কবিতাৰ কিতাপৰ বাবে পুৰস্কাৰ পাম্পছে। কিতাপখনৰ কবিতাৰ বিষয়বস্তুৰ বিষয়ে অলপ বহলাসম্প কব নে?
2. তেওঁ ভূমিষ্ঠ নহৈ নৌকাষ্ঠ হৈছিল। সেম্পসময়ত তেওঁৰ দেউতাক ডিবৰুৰ পৰা গুৱাহাটীলৈ বদলি হৈছিল।
3. *অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা 1888* চনত প্ৰতিষ্ঠা কৰা হৈছিল। সেম্পখন সভাসম্প পিচৰ দিনবোৰত অসম সাহিত্য সভালৈ মৌ সলায়।
4. বাঁহী এখন অসমীয়া আলোচনী আছিল। সেম্পখনৰ গুৰি লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাসম্প ধৰিছিল।
5. লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাসম্প বহুত গীত লিখিছিল। তাৰে ঐ ডা. ভূপেন হাজৰিকাসম্প গাম্পছে।

#### V. ঐ বাক্যত উত্তৰ দিয়ক।

1. বেজবৰুৱাৰ কোন চনত জন্ম হয়?
2. বেজবৰুৱাৰ জন্মৰ সময়ত অসম কাৰ অধীনত আছিল?
3. তেতিয়া অসমত কি ভাষা চলিছিল?
4. তেওঁ কলিকতাত কি সভাৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰে?
5. বাঁহী নামৰ আলোচনীখন কোনে উলিয়াস্পছিল?
6. যদি বাঁহী নোলালহেঁতেন তেনেহলে কি হ'লহেঁতেন?
7. বেজবৰুৱাস্প কাক বিয়া কৰাস্পছিল?
8. তেওঁ কিহৰ কাৰবাৰ কৰিছিল?
9. তেওঁক মানুহে কি বোলে?

#### VI. বহলাস্প উত্তৰ দিয়ক।

1. লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাস্প কি কি ৰচনা কৰিছিল বহলাস্প লিখক।
2. লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ বৈবাহিক জীৱনৰ বিষয়ে লিখক।
3. অসমীয়া ভাষাৰ বাবে বেজবৰুৱাস্প কি কি কৰিছিল লিখক।

পঢ়ক আৰু বুজি লওক

#### মামনি ৰয়ছম গোস্বামী

অসমৰ মহিলা সাহিত্যিক সকলৰ ভিতৰত মামনি ৰয়ছম গোস্বামী ঐা উল্লেখযোগ্য নাম। 2000 চনৰ জ্ঞানপীঠ বাঁ বিজয়ী মামনি ৰয়ছম গোস্বামীৰ প্ৰকৃত নাম হ'ল স্পন্দিৰা গোস্বামী। এগৰাকী সাহসী, মানবতাময়ী আৰু সমাজ সচেতন লেখিকা হিচাপে স্পন্দিৰা গোস্বামীৰ খ্যাতি সুদূৰ প্ৰসাৰী।

তিষ্কাধী আৰু স্পৰ্শকাতৰ লেখিকা গৰাকীৰ জীৱন এক বৰ্ণময় অভিজ্ঞতাৰ সমষ্টি। পিতৃৰ চৰকাৰী চাকৰী সূত্ৰে অসমৰ বহু ঠাম্প ঘূৰি ফুৰাত গোস্বামী অসমীয়া সমাজৰ সৈতে ভালদৰে পৰিচিত হবলৈ সুবিধা পায়। ফলত স্পয়াৰ সূক্ষ্ম বৰ্ণনাত্মক ৰূপৰ প্ৰকাশ ঘটিছিল তেওঁৰ গল্প উপন্যাস আদিত।

গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয়ত পঢ়ি থকা অৱস্থাত *মাধবেন ৰয়ছম* নামৰ দক্ষিণ ভাৰতীয় অভিনয় এজনৰে সৈতে পৰিচয় হৈছিল। সেম্প পৰিচয়েম্প প্ৰেমত পৰিণত হৈছিল আৰু শেষত দুয়ো বিবাহ পাশত আবদ্ধ হৈছিল। বিবাহৰ পিছত পতি *মাধবেন ৰয়ছম*ৰে সৈতে তেওঁৰ বিভিন্ন কৰ্মক্ষেত্ৰৰ ঘূৰি ফুৰিবলৈ পোৱাটো মামনি ৰয়ছম গোস্বামীৰ বাবেম্প নহয় ভাৰতীয় গল্প উপন্যাসৰ বাবেও ফলদায়ক আছিল। কিন্তু কাশ্মীৰৰ এক দুৰ্গম অঞ্চলত কৰ্মৰত অৱস্থাৰ ডেকা বয়সতে পতি মাধবেন ৰয়ছমৰ মৃত্যুৰ ঘটনাম্প গোস্বামীক বৰ নিৰ্মম ভাবে জোকাৰি থৈ গৈছিল। কবিতাৰ আলমত মনৰ ভাব মোকলোৱা লেখিকা গৰাকী এম্প ঘটনাৰ পিছতে সম্পূৰ্ণৰূপে কথাশিল্পৰ জগতখনলৈ গুচি আহিছিল। লেখিকা নোহোৱাহেঁতেন কি হ'ল হয় বুলি সোধা বহু সংবাদসেৱীৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰত তেওঁ কৈছিল যে সম্ভৱতঃ তেওঁৰ মৃত্যুৱেম্প ঘটিহেঁতেন। শ্ৰীমতী গোস্বামীৰ এম্প কথাষাৰ বিশেষ তাৎপৰ্য্যপূৰ্ণ।

মাধবেন ৰয়ছমৰ মৃত্যুৰ পিছত গোৱালপাৰা সৈনিক স্কুলত কৰ্ম জীৱন আৰম্ভ কৰা শ্ৰীমতী গোস্বামীয়ে ডক্টৰে ডিগ্ৰী লাভ কৰাৰ পিছত দিল্লী বিশ্ববিদ্যালয়ত যোগদান কৰে আৰু পিছলৈ অসমীয়া বিভাগৰ মুৰব্বী অধ্যাপিকাৰ গুৰু দায়িত্ব পালন কৰিবলৈ লয়। এম্প সময়চোৱাতে তেওঁৰ সাহিত্যিক প্ৰতিভা ফুলে ফলে জাতিস্কাৰ হৈ পৰে। তেওঁ নাৰীবাদী লেখিকা হিচাপেও সমাজত বিশেষ পৰিচিত হৈ পৰে। 'চিনাকী মৰম', 'কম্পনা হৃদয় এক নদীৰ নাম' আদিৰ দৰে মানবীয়তাৰে সংবেদনশীল বহু চুঁগিল্লৰ লেখিকা শ্ৰীমতী গোস্বামীৰ লেখনিয়ে ১৯৮৩ চনত 'সাহিত্য অকাডেমী বঁা' ১৯৮৮ চনত 'অসম সাহিত্য সভা বঁা', ১৯৮৩ চনত 'ভাৰত নিৰ্মাণ বঁা', ১৯৯৩ চনত 'কথা বঁা'ৰ লগতে ১৯৯৯ চনত 'অন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় তুলসী বঁা'ৰ উপৰিও আন বহু উল্লেখযোগ্য বঁা কঢ়িয়াবলৈ সক্ষম হয়।

‘চেনাবৰ সোঁত’, ‘নীলকল্পী ব্ৰজ’, ‘অহিৰণ’, ‘মামৰেধৰা তাৰোৱাল’ আদিৰ দৰে উপন্যাসৰ ৰচয়িতা স্পন্দিৰা গোস্বামী অসম আৰু ভাৰতীয় সংস্কৃতিৰ সেতুবন্ধকো। ‘নীলকল্পীব্ৰজ’ত মথুৰাৰ সংস্কৃতি যিদৰে প্ৰতিফলিত হৈছে দঁতাল হাতীৰ উঁপয়ে খোৱা হাওদাত চিত্ৰিত হৈছে অসমীয়া সংস্কৃতিৰ এটা ফাল। গল্প আৰু উপন্যাস সমগ্ৰত চিত্ৰিত কৰা অসমীয়া সমাজৰ বিহু, বাসন্তী পূজা, পুহন বিয়া আদিৰ সুন্দৰ উপস্থাপনে তেওঁৰ লিখনিসমূহক সংস্কৃতিৰ দস্তাবেজ হিচাপেও প্ৰতিস্থিত কৰিছে।

ভাৰতীয় বিভিন্ন ভাষালৈ অনূদিত স্পন্দিৰা গোস্বামীৰ লেখনি চুৱা-বাহী জাত-পাত, অন্ধবিশ্বাস তথা অমানবীয় ঘনৰ সঠিক প্ৰতিফলক। প্ৰতিবাদী চৰিত্ৰৰ উপস্থাপনেৰে এম্প কুসংস্কাৰবোৰৰ বিপক্ষে মাত মতা বিদ্যানুৰাগী লিখিকা গৰাকীৰ সমাজলৈ এম্পয়া এক মহান বৰঙনি। আন্তৰ্জাতীয়মূলক লেখা আধালিখা দস্তাবেজেৰে পাঠক সমাজত বহুল ভাৱে সমাদৃত লেখিকাগৰাকী আধুনিক কালৰ যি কোনো লিখক লেখিকাৰ বাবেম্প কৰ্মপ্ৰেৰণাৰ এক জীৱন্ত উৎস।

নতুন শব্দ

অসমীয়া শব্দ	হিন্দী অৰ্থ
মানবতাময়ী	মানবতা সে পূৰ্ণ
সুদূৰ প্ৰসাৰী	দূৰ-দূৰ তক প্ৰভাবী
তিক্ষ্ণাধী	সৰসে বুদ্ধিমান
স্পৰ্শকাতৰ	সংবেদনশীল
সমষ্টি	সংকলন
সূক্ষ্ম	সূক্ষ্ম
বৰ্ণনাত্মক	বৰ্ণনাত্মক
গল্প	গল্প, কহানী

উপন্যাস	उपन्यास
অভিযন্তা	अभियंता
কর্মক্ষেত্রত	कर्मक्षेत्र में
দুর্গম	दुर्गम
অঞ্চল	अंचल
কর্মৰত	कार्यरत
পতি	पति
জোকাৰি	सदमा
থৈ টৈগছিল	रखा था
সংবাদসেৱী	संवाददाता
তাৎপর্যপূর্ণ	तात्पर्यपूर्ण
গোৱালপাৰা	गवालपाड़ा (असम का एक जिला)
সৈনিক	सैनिक
গুৰু দায়িত্ব	गंभीर दायित्व
পৰিচিত	परिचित
ৰচয়িতা	रचयिता
সেতুবন্ধকো	सेतु का कार्य करनेवाला भी
উঁপ	दीमक
হাওদা	हौदा
চিত্ৰিত	चित्रित
বাসন্তীপূজা	दुर्गापूजा
পুহন বিয়া	पुहन बिया (स्त्री के गर्भवती रहने पर किया जानेवाला अनुष्ठान)
	दस्तावेज
দস্তাবেজ	अमानवीय
অমানবীয়	समादृता

সমাদৃত

উদ্গম

উৎস

## অভ্যাস

I. পাঠৰ জ্ঞানৰ ভিত্তিত তলৰ বাক্যসমূহ শুদ্ধ শব্দ-গাঠনিৰে পূৰ্ণ কৰক।

1. কু-সংস্কাৰ তথা অন্ধবিশ্বাসৰ বিৰুদ্ধে মামনি ৰয়ছম গোস্বামীয়ে লিখনিৰ দ্বাৰা সমাজ সংস্কাৰকৰ \_\_\_\_\_ ।
2. গোস্বামীৰ ব্যক্তিগত প্ৰচেষ্টাতে বহু নাৰীবাদী অনুষ্ঠানে \_\_\_\_\_ ।
3. এম্প নাৰীবাদী অনুষ্ঠানবোৰে সমাজৰ উন্নতিৰ হকে নানা কাম \_\_\_\_\_ ।
4. চৰকাৰী আদেশ \_\_\_\_\_ মাধবেন ৰয়ছম কাশ্মীৰলৈ \_\_\_\_\_ ।
5. তেওঁৰ গল্প উপন্যাসত 'বিহু', 'বাসন্তী পূজা', 'পুহন বিয়া' আদিৰ উপস্থাপনে তেওঁৰ লেখনি সমূহক সংস্কৃতিৰ \_\_\_\_\_ ।

II. বহলাম্প উত্তৰ দিয়ক।

1. স্পন্দিৰা গোস্বামীৰ কৰ্ম জীৱনৰ বিষয়ে বহলাম্প লিখক।
2. কি কি ঐনাম্প মামনি ৰয়ছম গোস্বামীক কথাশিল্পীত পৰিণত কৰিছিল?
3. লেখিকা হিচাপে স্পন্দিৰা গোস্বামীৰ পৰিচয় দিয়ক।
4. স্পন্দিৰা গোস্বামীয়ে লাভ কৰা বাঁ বাহনৰ বিষয়ে লিখক।

III. হিন্দীলৈ অনুবাদ কৰক।

লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা



লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাক আধুনিক অসমীয়া সাহিত্যৰ এজন পিতৃপুৰুষ বুলি কব পাৰি। তেখেতৰ প্ৰচেষ্টাত ১৯৮৮ চনত অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা গঢ়ি উঠে। এম্প কাৰ্য্যত তেখেতলৈ চন্দ্ৰপ্ৰসাদ আগৰৱালাৰ দৰে কেম্পবাগৰাকী স্বনামধন্য অসমীয়া যুবকে সহায়ৰ হাত আগবঢ়াম্পছিল। সেম্প সময়ত অসমত বাংলা ভাষাৰ প্ৰচলন আছিল। অ. ভা. উ. সা.ৰ আলম লৈ কলিকতাত থকা অসমীয়া যুবকসকল একগোঁ হৈছিল আৰু অসমীয়া ভাষাৰ উন্নতিৰ বাবে নানান আঁচনি যুগুতাম্প কাম আৰম্ভ কৰিছিল। তেওঁলোকে উপযুক্ত সময়ত এনে পদক্ষেপ নোলোৱাহেঁতেন অসমীয়া ভাষাৰ অস্তিত্বৰ বাবে সংকটৰ সৃষ্টি হ'লহেঁতেন।

লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা আছিল একেধাৰে কবি, গল্পকাৰ, কথাশিল্পী, গীতিকাৰ আৰু ব্যৱসায়ী। অসমীয়া সাহিত্যৰ এনে ঐ ভাগ নাম্প য'ত তেওঁৰ লখিমী হাতৰ পৰশ পৰা নাছিল। তেখেত আছিল প্ৰথম অসমীয়া চুঁ গল্পৰ জন্মদাতা; তেখেতে ৰচনা কৰা 'কন্যা' নামৰ চুঁগিল্লটো অসমীয়া ভাষাৰ প্ৰথম চুঁ গল্প।

অসমীয়া সাধুকথাৰ ক্ষেত্ৰখনতো তেখেত এজন লেখত লবলগীয়া ব্যক্তি আছিল। তেখেতে যদি 'বুঢ়ী আম্পৰ সাধু'ৰ দৰে সাধুকথাৰ পুথি লিখি নুলিয়ালেহেঁতেন, বহু অসমীয়া লোক-কথা পাহৰণিৰ গৰ্ভত লীন হ'লহেঁতেন। বেজবৰুৱাক সেয়েহে অসমীয়া সাধুকথাৰ জনক বুলি কোৱা হয়।

কবিতা আৰু গীত ৰচনাৰ ক্ষেত্ৰতো বেজবৰুৱাম্প যথেষ্ট বৰঙণি আগবঢ়াম্প থৈ গৈছে। তেখেতে নিজে কবিতা লিখিব নাজানে বুলি কৈছে যদিও কবিতাৰ বুৰঞ্জীতো তেওঁ নিজৰ নাম সোণালী আখৰেৰে লিখি থৈ গৈছে। তেখেতে ৰচনা কৰা গীত 'প্ৰেম প্ৰেমবুলি জগত ঘূৰিলোঁ' ডা. ভূপেন হাজৰিকাৰ কল্পত প্ৰাণ পাম্প উঠিছে।

ৰসৰচনাৰ ক্ষেত্ৰত লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা আছিল অতুলনীয়। 'কৃপাবৰ বৰবৰুৱা' ছদ্মনাম লৈ যদি তেখেতে 'কৃপাবৰ বৰুৱাৰ ভাবৰ বুৰবৰণি', 'কৃপাবৰ বৰুৱাৰ কাকতৰ টোপোলা', 'কৃপাবৰ বৰুৱাৰ ওভতনি', আদি ৰম্য ৰচনা নকৰিলেহেঁতেন তেন্তে বোধহয় ৰসৰচনা অসমীয়া ভাষাত স্পমান জনপ্ৰিয় নহ'লহেঁতেন। অন্ধবিশ্বাসী সমাজখনক ব্যঙ্গ কৰি ৰচনা কৰা

एम्प बस बचनाविलाके बहूतब चकु मेल खुरास्पछिल। तेखेतब उच्च मानव ब्यङ्ग बचनाब बावे तेखेतक बसबाज बोला हय।

१९७८ चनत असमीया जातिक कन्दुरास्प बेजबबुरास्प स्पहलोक त्याग कबि पबलोकलै याय। तेखेत आजि मबिओ अमब। तेखेत चिबदिन असमीयाब बावे प्रातः स्मबणीय ब्यक्ति है थाकिब।

#### IV. असमीयाँले अनुवाद करक।

राजा नृसिंहदेव को नदी, सरोवर, जंगल देखने का बड़ा शौक था। वह एक बार घूमने के इरादे से बाहर निकला। किले से बाहर मीलों तक बंजरभूमि थी। राजा उस भूमि से होकर निकल रहा था। अकस्मात उसने घोड़े को रोक लिया। उसने देखा एक आदमी झुककर कुछ बो रहा था। राजा उसके पास जा पहुँचा। काम में लगा आदमी एक बूढ़ा था। राजा ने देखा उस भूमि पर कई गड्ढे तैयार किए गए हैं। एक गड्ढे में बूढ़ा एक पौधा लगा रहा था। बूढ़ा पसीने से तर-बतर था। राजा को बड़ी हैरानी हुई। राजा को देखकर बूढ़े ने उसका अभिवादन किया। राजा ने बूढ़े से पूछा

-- तुम यह क्या कर रहे हो?

बूढ़ा बोला -- 'महाराज! मैं पौधा लगा रहा हूँ।'

'तुम शायद आम का पौधा लगा रहे हो!' राजा ने प्रश्न किया।

बूढ़ा बोला -- 'जी महाराज! यह आम का पौधा ही है। यह छाया भी देगा और फल भी।'

'पर तुम तो बहुत बूढ़े हो। पेड़ में फल लगेंगे, क्या तब तक तुम जीवित रहोगे?' राजा ने पूछा।

'महाराज! मुझे यह चिंता नहीं है कि फल भी मैं ही खाऊँ! मेरे लिए यही संतोष की बात होगी कि दूसरे तो इसके फल खा सकेंगे।' बूढ़ा बोला।

राजा ने कहा -- 'मुझे खुशी है कि मेरे राज्य में तुम्हारे जैसे लोग भी हैं। मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूँ। ये लो सोने की सौ मोहरें।'

बूढ़े ने खुश होकर कहा -- 'महाराज पेड़ में फल जब लगेंगे तब लगेंगे, लेकिन आपने तो मेरी मेहनत का फल आज ही दे दिया।'

#### V. आपुनि ভাল পোৱা এজন সাহিত্যিকৰ বিষয়ে এটা অনুচ্ছেদ লিখক।

## টোকা

1. -স্প : ধাতুৰ শেষত ‘-স্প’ যোগ কৰি অসমীয়াত বৰ্তমান কালৰ অসমাপিকা ক্ৰিয়া গঠন কৰা হয়। এনে ধৰণৰ ক্ৰিয়াস্প দুটা বাক্য যোগ কৰি এটা কৰিব পাৰে। যেনে --

মস্প ভাত খালোঁ। তাৰ পাছত শুলোঁ

মস্প ভাত খাস্প শুলোঁ।

2. -ওঁতে : ধাতুৰ শেষত ‘-ওঁতে’ যোগ কৰি আন এক প্ৰকাৰৰ অসমাপিকা ক্ৰিয়া গঠন কৰা হয়। এটা ক্ৰিয়াৰ কাম চলি থকা সময়ত আন এটা ক্ৰিয়াৰ কাৰ্য্য সম্পন্ন হোৱা বুজাবলৈ হলে প্ৰথমতে আৰম্ভ হোৱা কাৰ্য্য বুজোৱা ধাতুটোৰ লগত ‘-ওঁতে’ যুক্ত হৈ অসমাপিকা ক্ৰিয়া গঠন কৰে। স্পয়ে দুটা বাক্য সংযোগ কৰিব পাৰে। যেনে --

ভাত খাস্প আছোঁ। এনেতে ডিঙিত কাস্প লাগিল।

ভাত খাস্প থাকোঁতে ডিঙিত কাস্প লাগিল।

3. -স্পলত : ধাতুৰ শেষত ‘-স্পলত’ যোগ কৰি আন প্ৰকাৰৰ অসমাপিকা ক্ৰিয়া গঠন কৰা হয়। অতীত কালৰ ক্ৰিয়া পদৰ ভিত্তিত স্পয়াক গঠন কৰা হয়। কোনো এটা ক্ৰিয়াৰ কাৰ্য্য সম্পন্ন হোৱাৰ পিছতে আন ক্ৰিয়াৰ কাৰ্য্য হোৱা বুজাবলৈ হলে প্ৰথমে সম্পন্ন হোৱা কাৰ্য্য বুজোৱা ধাতুটোৰ লগত ‘-স্পলত’ যুক্ত হৈ এটা অসমাপিকা ক্ৰিয়া গঠন কৰে। স্পয়ে দুটা বাক্য সংযোগ কৰিব পাৰে। যেনে --

সূৰ্য উদয় হ’ল। তেতিয়া পদুম ফুলিল।

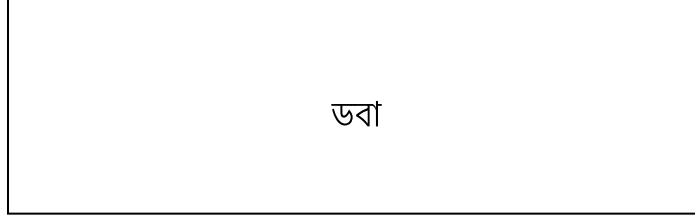
সূৰ্য উদয় হ’লত পদুম ফুলিল।

4. বাক্য আৰ্হিৰ বিষয়ে : এস্প পাঠত যৌগিক বাক্যৰ লগত শিকাৰুক পৰিচয় কৰি দিয়া হৈছে। যৌগিক বাক্যৰ গঠন তেনেস্প সহজ। প্ৰথম বাক্যৰ ক্ৰিয়াটো সলনি কৰি

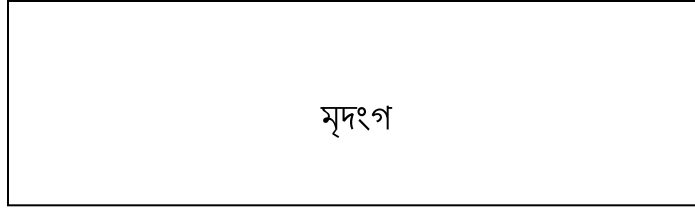
তাৰ ঠাম্পত ‘-স্প’, ‘-ওঁতে’ অথবা ‘-স্পলত’ যুক্ত অসমাপিকা ক্ৰিয়া বহুওৱা হয়। তেতিয়া দ্বিতীয় বাক্যৰ দুটা এটা শব্দ অদৰকাৰী হৈ পৰে আৰু সেস্প কেস্পী শব্দ বাদ দিব লগীয়া হয়।

5. চন্দ্ৰকুমাৰ আগৰৱালা (১৮৬৭-১৯৩৮) : চন্দ্ৰকুমাৰ আগৰৱালা অসমীয়া ৰোমান্টিক কবিতাৰ বীৰীয়া। এওঁ লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা আৰু হেমচন্দ্ৰ গোস্বামীৰ সহযোগত ১৮৮৯ চনত প্ৰথম অসমীয়া আলোচনী ‘জোনাকী’ প্ৰকাশ কৰিছিল আৰু তেওঁ তাৰ প্ৰতিষ্ঠাপক সম্পাদক আছিল। তেওঁৰ সৃষ্টিৰ ভিতৰত *প্ৰতিমা*, *বীণবৰাগী* আৰু *চন্দ্ৰমৃত* অন্যতম। তেওঁ ‘অসমীয়া’, ‘সাদিনীয়া অসমীয়া’, ‘তিনদিনীয়া অসমীয়াৰ’ প্ৰতিষ্ঠাপক আছিল।
6. অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা : চন্দ্ৰকুমাৰ আগৰৱালা, লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱা, হেমচন্দ্ৰ গোস্বামী আদিৰ দৰে কেস্পজনমান স্বনামধন্য অসমীয়া সাহিত্যিকে ১৮৮৮ চনত কলিকতাত *অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা* প্ৰতিষ্ঠা কৰে। সেস্প সময়ত অসমৰ বিদ্যালয় আৰু আদালতত চৰকাৰী ভাষা হিচাপে অসমীয়াৰ সলনি বাংলা ভাষা প্ৰবৰ্তন কৰা হৈছিল। এস্প সভাস্প কলিকতা আৰু অসমত থকা অসমীয়া সাহিত্যিকসকলক একগৌ কৰি অসমীয়া ভাষাৰ পুনৰ প্ৰচলন বাবে দাবী আৰম্ভ কৰে।
7. অসম সাহিত্য সভা : *অসমীয়া ভাষা উন্নতি সাধিনী সভা*ৰ পৰা জন্ম হোৱা অসম সাহিত্য সভাৰ প্ৰথমখন অধিবেশন হৈছিল ১৯১৭ চনত শিৱসাগৰত। অসম সাহিত্য সভাস্প অসমীয়া ভাষা আৰু সাহিত্যৰ উন্নতিৰ ক্ষেত্ৰত বহুখিনি অবদান আগবঢ়াস্পছে। এস্প সভা এতিয়াও বৰ শক্তিশালী।
8. বাঁহী : অসমীয়া ভাষাৰ দ্বিতীয়খন আলোচনী ‘বাঁহী’ ১৯০৯ চনত লক্ষ্মীনাথ বেজবৰুৱাৰ সম্পাদনত প্ৰকাশ পায়। *বাঁহী*ৰ জড়িয়তে বহু কেস্পজন অসমীয়া সাহিত্যিকে প্ৰতিষ্ঠা লাভ কৰাত অসমীয়া ভাষাস্প ঠন ধৰি উঠে।

9. ডবা : কাঠৰ খোলাৰ ওপৰত গৰু বা ম'হৰ চামৰা লগাম্প তৈয়াৰ কৰা ডুগীৰ আকৃতিৰ এবিধ বাদ্য। এম্প বাদ্য ডুগীতকৈ যথেষ্ট ডাঙৰ। এম্প বাদ্য দুডাল লাঠিৰে বজোৱা হয়। অসমৰ প্ৰায় সকলোবিলাক নামঘৰতে উৎসব-পাৰ্বন বা স্পয়াৰ জাননী দিবলৈ ডবা বজোৱা হয়।



10. মৃদংগ : মৃদংগ পাখোৱাজ আকৃতিৰ এবিধ বাদ্য। এম্প বাদ্যৰ দুম্পমূৰে চামৰা লগাম্প তৈয়াৰ কৰা হয়। খোলাটো কাঠৰ। অসমৰ বহুতো অঞ্চলত 'গায়ন-বায়ন'ত মৃদংগ ব্যৱহাৰ কৰা হয়। দক্ষিণ ভাৰতৰ মৃদংগৰ লগত স্পয়াৰ সাদৃশ্য আছে।



11. খোল : খোল অসমৰ এবিধ থলুৱা বাদ্য। শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱে এম্প বাদ্যৰ প্ৰচলন কৰে। এটা কাঠৰ বা মাৰিৰ খোলাৰ দুম্প মূৰে চামৰা লগাম্প এম্প বাদ্য বনোৱা হয়। এম্প বাদ্য হাতেৰে বজোৱা হয়। গায়ন-বায়ন, সত্ৰীয়া অনুষ্ঠান আদিত খোল এটা অবিচ্ছেদ্য অংগ।

